

---

Shri Parshvanathajayamala

श्रीपार्श्वनाथजयमाला

Document Information

---

Text title : pArshvanAthajayamALA  
File name : pArshvanAthajayamALA.itx  
Category : deities\_misc, jaina  
Location : doc\_deities\_misc  
Proofread by : DPD  
Latest update : March 31, 2019  
Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 3, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Parshvanathajayamala

---

### श्रीपार्श्वनाथजयमाला

---



अथ श्रीपार्श्वनाथ जयमाला ।

वन्दे तं जिनपार्श्वनाथमनघं ! रत्नत्रयालङ्कृतं

द्वीं बीजं मतिदुःखदावशमनं घोरपसर्गापडम् ।

द्वेवेन्द्राधिपतिं भगाधिपनतं वन्ध्यापिनारीसुतं

पद्मिनीसतिशासनं भयडरं नागेन्द्रसेवान्वितम् ॥ १ ॥

अमरनाथगाण्ठाधिपवन्धं मुनिजनार्यासेवितपादम् ।

भक्तिनम्रभवसागरपोतं वाज्यामृतरसपोषितभूतम् ॥ २ ॥

कृतोपसर्गां कमठैरिष्ठे जितवारातिभवान्तरश्रेष्ठम् ।

कुण्डलकुण्डलिनीकृतछत्रं वारितमेधाऽम्बरशस्त्रम् ॥ ३ ॥

कर्मपर्वतलतासमवजं भयतमवारणसूर्यसुसज्जं

केवलज्ञानविलोकनदक्षं भोषितलोकालोकविपक्षम् ॥ ४ ॥

राजितसमवसरणसुनिधानं यामरछत्रसिंहासनभानम् ।

सुरासुरभेयरतिष्ठति सौम्यं द्वादशभासाढितसन्मुष्यम् ॥ ५ ॥

धर्मप्रकाशितलक्षणसहितं मूलदयानिधिपापविरहितम् ।

जन्तूत्तारणसमरथसूरं भव्यकमलवाज्यामृतपूरम् ॥ ६ ॥

देवी पद्मावति वामे विशालं रक्षतु शासनमुषुद्धमजालम् ।

दक्षिणदिशि सोढै कृष्णराजं विघ्ननिवारणदेवविराजम् ॥ ७ ॥

धृष्टगुं विधि पार्श्वजिनं प्राणम्यं अनन्तयतुष्टयगम्यागम्यम् ।

ये नरनारि त्रिकालं पूजन्ति ते मन वलित सङ्कल लडन्ति ॥ ८ ॥

नाग नागिणी अतिशय धारी उधर्या दम्पती जनसुभकारी ।


कंधोरघनदुःखनिवारी वञ्छितकृल अतिदायक भारी ॥ ९ ॥

धत्ता (मालिनी ! )


आपद्धिविधधारी सम्पदासौष्यकारी  
त्रिभुवनपदधारी सिद्धिलोकाग्रसूरी ।  
जलबहुविधपूरैर्गन्धमाल्यादिसारै-  
जिनवरमुष्मिम्भं पूजितं भावभक्त्या ॥ ८ ॥  
ॐ ह्रीं क्लीं महार्थम् ॥  
एति श्रीपार्श्वनाथ जयमाला सम्पूर्णा ।

Proofread by DPD

---

——  
*Shri Parshvanathajayamala*

pdf was typeset on December 3, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

